Library Progress International
Vol.43 No. 2, Jul-Dec 2023: P. 2865-2868

Print version ISSN 0970 1052
Online version ISSN 2320 317X

Original Article

Available online at www.bpasjournals.com

भारतीय शास्त्रीय संगीत इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्र का प्रचलन: एक अध्ययन

हिमजा पांडे[1] , डॉ. अंशुमन शर्मा

(सहायक प्रोफेसर)[2], संगीत विभाग

[1,2] सनराइज यूनिवर्सिटी , अलवर, राजस्थान

How to cite this article: हिमजा पांडे, डॉ. अंशुमन शर्मा (2023) भारतीय शास्त्रीय संगीत इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्र का प्रचलन: एक अध्ययन. *Library Progress International,* 43(2), 2877-2880

शोध सारांश:

"प्रयोजनमनुदिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते।"

बिना किसी विशिष्ट प्रयोजन के कोई भी व्यक्ति किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता तब शोध जैसे महत्वपूर्ण कार्य करने के पीछे कोई विशेष प्रयोजन होता है। संगीत विषय में शोध कार्य अपने आप में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि संगीत एक मात्र मनोरंजन का साधन न होकर समस्त जनमानस के दुःखों एवं शोकों को दूर करने की प्राकृतिक औषधि है। संगीत तक प्रदर्शनात्मक कला होते हुए भी एक विद्या की भांति अध्ययन-अध्यापन का विषय भी रहा है। यह एक "ललित कला" होते हुए भी विद्या इसलिए मानी जाती है कि यह निश्चित सिद्धान्तों पर आधारित है। यह सिद्धान्त ही शास्त्र का निर्माण करते हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत अपनी परंपरागतता और शुद्धता के लिए जाना जाता है। हालांकि, समय के साथ इसमें तकनीकी विकास और आधुनिक वाद्य यंत्रों का प्रभाव बढ़ा है। इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्रों का उपयोग पहले पाश्चात्य संगीत तक सीमित था, लेकिन अब यह भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी प्रचलित हो रहा है। यह बदलाव न केवल संगीत की प्रस्तुति में नवीनता लाया है, बल्कि संगीत साधकों और कलाकारों के लिए नई संभावनाओं के द्वार भी खोले हैं।

शब्द कुंजी:- भारतीय, शास्त्रीय संगीत इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्र इत्यादि|

पृष्ठभूमि:-

आज भारतीय संगीत का जो रूप हमारे सम्मुख उपस्थित है वह यकायक किसी की खोज या बौद्धिक उपज द्वारा निर्माण नहीं हुआ। उसके मूलरूप में निरन्तर वृद्धि और परिवर्तन होते-होते ही उसका वर्तमान स्वरूप निश्चित हुआ है। वर्तमान हिन्दुस्तानी संगीत एक अत्यन्त विस्तृत और सुदृढ़ परम्परा लेकर नवीन युग की ओर बढ़ रहा है। प्रायः शास्त्रीय संगीत पहले मंदिरों, गिरिजाघरों, राजा-महाराजाओं के दरबारों या छोटी-छोटी महफिलों के सीमित दायरे में बंधा हुआ था तथा उस समय कलाकारों की प्रस्तुति को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने का कोई भी साधन नहीं था। जिससे उन कलाकारों के साथ ही उनकी कला का भी अंत हो जाता था, परन्तु इलेक्ट्रानिक माध्यमों की सुविधा से शास्त्रीय संगीत को संरक्षण प्राप्त हुआ और शास्त्रीय संगीत के प्रसार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

वैज्ञानिकता ने जहां एक ओर मनुष्य के जीवन के सम्भावित सामान्य पक्षों को प्रभावित किया है वहीं भारतीय संस्कृति एवं कला भी उसके प्रभाव से अछूती न रही। कारण संगीत का क्षेत्र भी प्रभावित हुआ, संगीत के क्षेत्र में इलेक्ट्रानिक वाद्यों ने विभिन्न प्रकार से प्रभावित किया जिसमें विभिन्न प्रकार के स्वर विस्तारक यन्त्र तथ विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रानिक यन्त्र जैसे सिन्धेसाईजर, इलेक्ट्रानिक तबला इलेक्ट्रानिक गिटार, इलेक्ट्रानिक तानपुरा, इलेक्ट्रानिक सुनादमाला, इलेक्ट्रानिक वीणा,

आक्टोपैड आदि के सम्मेलन से संगीत के शास्त्र एवं क्रियात्मक दोनों पक्षों को समृद्ध बनाने में अत्यन्त सहयोग मिला जिससे संगीत की शिक्षा एवं प्रदर्शन सभी कुछ प्रभावित हुए एवं संगीत कला घरानों के सीमित दायरे से निकलकर जन-साधारण तक पहुंची।

इलेक्ट्रानिक संगीत उपकरणों से संगीत को प्रयोग और शिक्षण दोनों के लिये ही एक बहुत बड़ा सहारा मिल गया है। एक ओर जहां कलाकार को स्थिर सुर और ताल में त्रुटिहीन प्रस्तुति की ओर प्रेरित करते है। वहीं कठिन आरम्भिक वर्षों में संगीत के विद्यार्थी को सुर लय आदि की सटीक समझ पैदा करने में मदद करते हैं। किसी भी प्राकृतिक परिवर्तन से अप्रभावित इलेक्ट्रानिक वाद्य सदैव सुरीले रहते हैं। सिर्फ बटन दबाते ही स्वतः चलने वाले ये वाद्य विद्यार्थी और कलाकार को किसी भी स्थान पर, किसी भी समय, मनचाही अवधि तक निरन्तर एक सी संगति के साथ रियाज करने का मौका देते हैं।

ग्रामोफोन के आविष्कार ने संगीत सीखना सभी के लिए सुलभ कर दिया। पुराने घरानेदार नामचीन गायकों की गायकी और बन्दिशों आदि को संगीत विद्यार्थियों के लिए इन उपकरणों ने आसान की है। आज विद्यार्थी रिकार्ड प्लेयर, टेप, कम्प्यूटर, स्टीरियो और म्यूजिक सिस्टम की मदद से कमियों को निकाल सकता है।

इलेक्ट्रॉनिक तानपूरा, तबला पेटी आदि से विद्यार्थी सहज में ही अपना अभ्यास कर सकता है। सिन्थेसाइजर जैसे इलेक्ट्रॉनिक इन्स्ट्रूमेन्ट ने अलग-अलग प्रकार के वाद्य यन्त्रों को एक ही की-बोर्ड पर सम्भव बनाकर चमत्कार ही कर दिया है। इसीलिए आज सामान्य जन-जीवन और फिल्म संगीत में इस की-बोर्ड (सिन्थेसाइजर) का सर्वाधिक महत्व है। यहां टेलीविजन जैसे श्रव्य एवं दृश्य उपकरण ने मनोरंजन एवं संगीत के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी विकास किया हैं। आज कोई भी घर-परिवार ऐसा नहीं जहां टेलीविजन के रूप में यह छोटा सा सिनेमा स्कोप न हो।

विद्युतीय वाद्य तबला, तानपूरा इत्यादि संगीत शिक्षार्थियों के अभ्यास आदि में सहयोगी सिद्ध हुए। इन विभिन्न माध्यमों से संगीत के क्षेत्र में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को अनुभव किया जा सकता है। टेपरिकार्डर में रिकार्ड करने का या अन्य कलाकारों का ध्वन्यांकन सुनकर गायकी बनाने का चलन विद्यार्थियों में उत्पन्न होने लगा है। संगीत के लिए माइक्रोफोन विज्ञान की सबसे बड़ी देन है। इस उपकरण ने संगीत की आन्तरिक दुनिया को ही बदल दिया है। जो संगीत पहले कुछ ही श्रोताओं के बीच सीमित था, अब माइक्रोफोन के जरिये श्रोताओं की संख्या में बढ़ोत्तरी हुयी।

गायन के साथ-साथ वाद्य यंत्रों के प्रचार में ध्वनि विस्तारक यंत्रों का बहुत बड़ा योगदान रहा। ध्वनि विस्तारक यंत्र की अनुपस्थिति में सितार या सरोद पर किया गया मींड़, गमक या मुर्की, कृन्तन आदि का बारीक काम सीमित श्रोता ही सुन सकते थे और बड़ी-बड़ी सभाओं में केवल मंच के पास बैठे श्रोता ही संगीत का आनन्द ले पाते थे। परन्तु आज मीड़, गमक, कृन्तन, मुर्की आदि का बारीक से बारीक काम भी ध्वनि विस्तारक यंत्र के माध्यम से दूर से दूर बैठे श्रोता को भी स्पष्ट सुनायी देता है। जो वाद्य तार को खींचकर बजाये जाते हैं, उनमें तार से खींचे सूक्ष्म स्वर तथा बाहरी स्वर की प्रतिध्वनि बड़ी जल्दी समाप्त हो जाती है जिसका बिना माइक्रोफोन के श्रोता तक पहुंचना कठिन होता है। माइक्रोफोन से जो स्वर निर्बल कंपन का भी हो वह भी सुस्पष्ट और परिवर्द्धित रुप में सुनायी पड़ता है। इसलिए तत और सुषिर वाद्यों के प्रदर्शन में इन वैज्ञानिक उपकरणों के कारण आश्चर्यजनक परिवर्तन आए तथा इन वाद्यों का ध्वन्यात्मक प्रभाव बढ़ा। आजकल अति सूक्ष्म माइक्रोफोन वाद्यों में ही लगाकर कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। जिसके माध्यम से वाद्यों के ध्वन्यात्मक सौन्दर्य में पहले की अपेक्षा अधिक वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण से भारतीय संगीत को हुई हानियां इस प्रकार हमने उपरोका विवरण में देखा कि आज वैश्वीकरण के फलस्वरूप हमारे भारतीय संगीत को अनेक हानियां हो रही हैं। आजकल श्रोताओं के पास समय कम रहता है। जिसका असर सगीत के कार्यक्रमों पर पर्याप्त रूप से दिखाई देता है। आज गायन-वादन एवं नृत्य का प्रारूप निश्चित सा हो गया है। यथा-आधे-एक घण्टे

के कार्यक्रम में कितनी देर अलाप होगा, कितनी ताने ली जाएगी अथवा जितनी देर झाला बजेगा इत्यादि सब निश्चित रहता है। वैश्वीकरण से बाजारीकरण की प्रवृत्ति का आगमन हुआ जिसके परिणामस्वरूप सगीत को भी एक "उत्पाद" के रूप में देखा जाने लगा है। आज के भारतीय संगीत कारों ने विदेशी संगीत कारों के साथ मिलकर प्रयोग करने की प्रवृत्ति बढ़ी है हालाकि कई प्रयोग राफल भी रहे हैं। परन्तु इस प्रवृत्ति के बढ़ने से fusion के नाम पर "परम्परा और धरोहर" के नष्ट होने की संभावना बढ़ी है। आज मिश्रण का प्रचलन अधिक दिखाई देता है। जिससे भारतीय संगीत की शुद्धता प्रभावित हुई है, जो भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं ही है।

भारतीय संगीत में प्रयुक्त इलेक्ट्रानिक वाद्य

तालोमीटर हिन्दुस्तान में सर्वप्रथम 1978 में इलेक्ट्रॉनिक ताल यंत्र तालोमीटर का निर्माण राजनारायण द्वारा किया गया। दक्षिण भारत की तालों को हस्तक्रिया द्वारा जिस प्रकार प्रदर्शित किया जाता है, यह उपकरण उसी क्रिया को प्रदर्शित करता है। यह अपनी तरह का अकेला वाद्ययंत्र है जो ताल क्रिया के प्रदर्शन हेतु बनाया गया है।

इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा तानपुरा एक तत् वाद्य की श्रेणी में आने वाला वाद्य है। परन्तु वर्तमान समय में ऐसा कोई भी शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम नहीं होता जहा पर इस वाद्य की आवयकता महसूस न की जा रही हो। इलेक्ट्रानिक तानपुरा लगभग 1940 के समय में प्रचार प्रसार में लाया गया।

इलेक्ट्रानिक तम्बूरा 1979-80 में विद्युत तम्बूरा सारंग का आविष्कार हुआ। इसके प्रारंभिक ढांचे में कृत्रिम ध्यनिका प्रयोग किया गया। किन्तु बाद के ढ़ाचो में पास्तविक तम्बूरा की आवाज को माइक्रोचिप में संग्रहित कर इस्तेमाल किया गया। आधुनिक विद्युत तम्बूरो मे दोनो ही प्रकार की सुविधा दी गयी है। प्रयोगकर्ता यदि चाहे तो परम्परागत तरीके से स्वरों को छेडे जाने वाली ध्वनि का चयन कर सकता है अन्यथा सुरपेटी के समान निरन्तर ध्यनि पन्द्वति द्वारा स्वरों को बजा सकते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक तबला 1988 में विद्युत तबला 'तालमाला' का आविष्कार हुआ। सर्वप्रथम
पी०टी० 13 तत्पश्चात पी०टी० 24 ढाँचे बनाये गये। ये भी आयताकार लकड़ी के बाक्स द्वारा निर्मित किये गये। इस विद्युत तबले को बजाने के लिए विभिन्न प्रकार के स्थिचों का प्रयोग किया जाता है। स्विच ऑन करने के बाद ताल और लय का चयन कर मनोवांछित स्वर में मिलाकर प्रारम्भ करने के लिए बटन दबाते ही यह स्वतः बजने लगता है।

इलेक्ट्रॉनिक वीणा- पारम्परिक वीणा की ध्वनि धीमी होती है एवं इसकी संरचना कलात्मक एवं कोमल होती है। जिसके कारण इस की परिवहनीयता प्रभावित होती है। वीणा वादक इन समस्याओं से जूझते हुए कॉन्टेक्ट माइक्रोफोन्स का प्रयोग करते हैं।

सुनादमाला- 1993 में विद्युत लहरा सुनादमाला' का आविष्कार हुआ। यह यंत्र विभिन्न प्रकार की हिन्दुस्तानी तालों के साथ बजने वाले लगभग 200 धुनों के लहने बजा सकता है।

स्वरूपिनी डिजिटल स्वरमण्डल- ऐसे बहुत से गायक है जो प्रर्दशन के दौरान स्वर मण्डल का प्रयोग करते हैं। पारंपरिक स्वरमण्डल में 16 या 24 तार होते हैं जिन्हें प्रस्तुति के रागानुकूल बहुत ध्यान से मिलाना पड़ता है।

सिन्थेजाईजर यह एक विदेशी वाद्य है जिसने आधुनिकि संगीत में क्रान्ति ला दी है। इस पर बहत्तर स्वर स्थान एक साथ सुने जा सकते हैं। देखने में यह पियानो की तरह है। इसके द्वारा विभिन्न प्रकार की ध्वनिया तथा विभिन्न वाद्य यत्रों की घ्वनियों निकाली जा सकती है।। जो आवाज हम सोचते हैं, वही आवाज इस पर हम निकाल सकते हैं। इस पर रिदम बाक्स भी लगा रहता है। जिसके द्वारा विभिन्न तालो को विभिन्न लयों ने सेट किया जा सकता है।

इलेक्ट्रानिक ऑक्टोपैड- यह इलेक्ट्रानिक वाद्य यत्र वर्तमान समय में अवनद्य एवं धनवाद्य के समस्त वाद्यों को अपने आप में

समाहित कर लिया है। प्रायः आज यह देखने को मिलता है कि इस वाद्य में विभिन्न प्रकार के धुनों को निकाला जा सकता है।

इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्रों के लाभ

अधिक सुविधाजनक – पारंपरिक वाद्य यंत्रों की तुलना में हल्के और पोर्टेबल होते हैं।

स्थिरता और नियंत्रण – तानपुरा और तबला में सटीक लय और ध्वनि नियंत्रण संभव।

रिकॉर्डिंग और प्रस्तुति में सहायक – डिजिटल उपकरणों से ध्वनि को आसानी से संपादित किया जा सकता है।

नवाचार और प्रयोग की स्वतंत्रता – संगीतकार नए ध्वनि प्रभाव जोड़ सकते हैं और प्रयोग कर सकते हैं।

चुनौतियाँ और सीमाएँ

पारंपरिक ध्वनि की हानि – इलेक्ट्रॉनिक वाद्ययंत्रों में प्राकृतिक ध्वनि की कमी हो सकती है।

गुरु-शिष्य परंपरा पर प्रभाव – इलेक्ट्रॉनिक साधनों से पारंपरिक शिक्षण पद्धति प्रभावित हो सकती है।

संगीत की आत्मीयता और भावनात्मकता पर प्रभाव – स्वाभाविक ध्वनि और हाथ से बजाने की अनुभूति इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों में नहीं होती।

निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत में इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्रों का प्रचलन बढ़ रहा है और यह संगीत की प्रस्तुति, शिक्षा, और अभ्यास के लिए लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं। हालाँकि, इनका प्रयोग संतुलित रूप में होना चाहिए ताकि पारंपरिकता और आधुनिकता के बीच सामंजस्य बना रहे। भविष्य में यह तकनीक भारतीय शास्त्रीय संगीत के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

सन्दर्भ-सूची

1. गोवर्धन शांति, संगीत शास्त्र दर्पण, प्रथम भाग, पाठक पब्लिके शेंज दलाहाबाद 1987
2. गौतम एम.आर. इवोल्यूशन आफ राग एण्ड ताल इन इण्डियन म्यूजिक, मुंशीराम मनोहर लाल पब्लिशेज़, 1989 1
3. चक्रवर्ती इन्द्राणी, संगीत मंजुषा, मित्तल पब्लिकेशंज, नई दिल्ली, 1988
4. चौधरी सुभद्रा, भारतीय संगीत में ताल और रूप-विधान. कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर. 1984
5. चौबे सुशील कुमार, हमारा आधुनिक संगीत. उ.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊः ।
6. जैन विजय लक्ष्मी, संगीत दर्शन, राजस्थानी ग्रन्थगार, जोधपुर, 19891